❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि।

ऋग्वेद 8/92/32

हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।

O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 39, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 सितम्बर, 2016 से रविवार 18 सितम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्णयानुसार आसाम-नागालैंड में
19-20-21 नवम्बर को होगा विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन

एक बार आसाम एवं नागालैंड के जनजातीय क्षेत्रों में आर्यसमाज की गतिविधियों को देखने हेतु अवश्य ही पहुंचें

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द विद्या निकेतन धनश्री के विशाल नव निर्मित भवन का होगा लोकार्पण

दीमापुर में विद्यालय के नए भवन की नींव रखी जाएगी
पोखाजान व धनश्री (आसाम) व दीमापुर (नागालैंड) में होंगे आयोजन

आर्यसमाज के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, दयानन्द सेवाश्रम संघ नार्थ-ईस्ट के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त जी, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री शत्रुघ्न लाल आर्य जी, उद्योगपति शिव कुमार चौधरी जी, स्वामी धर्मानन्दजी महाराज, आचार्य विजयपाल जी, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति स्वामी देवव्रत जी एवं अनेक आर्यश्रेष्ठियों ने दी पहुंचने की स्वीकृति।

जनजातीय वैदिक महासम्मेलन सम्मेलन में पहुंचने के लिए : दीमापुर हवाई एवं रेल मार्ग दोनों से पहुंचा जा सकता है। नई दिल्ली से राजधानी भी दीमापुर तक जाती है। दीमापुर - धनश्री से एक घंटे की दूर पर है। सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक अभी से अपनी रेल/हवाई यात्रा की टिकटें आरक्षित करवा लेवें। अधिक जानकारी के लिए श्री जोगेन्द्र खट्टर 9810040982 से सम्पर्क करें।

दयानन्द विद्या निकेतन सरुपाथार जिला गोलाघाट (आसाम) का रजत जयन्ती समारोह विशेष समारोह पूर्वक सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में आसाम के गोलााट जिले में स्व. श्री पथ्वीराज शास्त्री जी द्वारा वर्ष 1990 में 1000/- रुपये मासिक के किराए पर एक कमरे में आरम्भ किया गए विद्यालय दयानन्द विद्या निकेतन सरुपाथार की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक 8 से 11 सितम्बर तक रजत जयन्ती समारोह बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, दयानन्द सेवाश्रम संघ (नार्थ- ईस्ट) के महासचिव श्री जोगेन्द्र खट्टर, एम.डी.एच. परिवार से श्री अनिल कुमार अरोड़ा जी विशेष रूप से समारोह में पहुंचे।

दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, दयानन्द सेवाश्रम संघ (नार्थ- ईस्ट) के महासचिव श्री जोगेन्द्र खट्टर, एम.डी.एच. परिवार से श्री अनिल कुमार अरोड़ा एवं श्री सन्तोष शास्त्री जी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-22 अक्टूबर 2016 टुंडिखेल, काठमांडु

आर्यजनों के उत्साह को देखकर हवाई एवं बस यात्रा की बढ़ाई गई सीटें

नेपाल आर्यसमाज के प्रतिनिधि श्री तारानाथ मैनाली एवं माधव प्रसाद आर्य भारत दौरे पर

वैदिक विद्वानों, सभा अधिकारियों दिया आमन्त्रण : सफलता हेतु की सहयोग की अपील

जोधपुर, 36गढ़, कनार्टक, महाराष्ट्र, उड़ीसा से एक हजार से अधिक आर्यजनों के पहुंचने की सूचनाएं : उ.प्रदेश, बिहार एवं नेपाल से लगे जिलों से हजारों आर्यजनों के साथ-साथ पाकिस्तान, बर्मा, न्यूजीलैंड, अमेरिका कनाड़ा हौलैंड, मॉरिशस, लन्दन से भी पहुंचेंगे आर्यजन

जो आर्य महानुभाव अभी तक अपना पंजीकरण न करा सकें हो वे अपना पंजीकरण किसी भी यात्रा ऑपशन में यथाशीघ्र करवा लेवें। आवेदन पत्र सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड किया जा सकता है। इच्छुक महानुभाव पूर्ण भरे आवेदन पत्र के साथ आवश्यक राशि का ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भेजें। अधिक जानकारी के लिए श्री एस. पी. सिंह जी (9540040324) से सम्पर्क करें।

नेपाल यात्रा हेतु नया ऑपशन 2 (सी) तैयार किया गया है। विवरण के लिए पृष्ठ 7 पर देखें।

वेद-स्वाध्याय

मुझे आश्रय दो

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन् त्वां आगांसि कृणवत्सखा ते।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन् भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम्।। -ऋ. 7/88/6
ऋषिः वसिष्ठः।। देवताः वरुणः।। छन्दः निचृत्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ-**वरुण**=हे वरुण! **यः नित्यः आपिः**=जो तेरा सनातन बन्धु है वह ते सखा=तेरा साथी **प्रियः सन्**=तेरा प्यारा होता हुआ भी **त्वां आगांसि कृण्वत्**=तेरे प्रति पाप, अपराध किया करता है। **यक्षिन्**=हे यजनीय देव! **एनस्वन्तः**=पापी होते हुए हम **ते मा भुजेम**=तेरे दिये भोग न भोगें **विप्रः स्तुवते वरूथं यन्धि स्म**=इस प्रकार तुम सर्वज्ञ मुझ उपासक को अपनी शरण या घर दे दो।

विनय-हे जगदीश्वर! यह जीव तुम्हारा सनातन बन्धु है, यह तुमसे पृथक् नहीं हो सकता। जीव चाहे कितना पतित हो जाए, वास्तव में तो यह स्वरूपतः चेतन आत्मा ही है। इस जीवात्मा में तुम सदा स्वामी (संचालक) होकर व्याप्त हो और तुममें यह जीव-आत्मा सदा आश्रित है। एवं, जीव सदा तुम्हें प्राप्त तुम्हारा 'आपिः' है, सदा तुमसे बँधा हुआ तुम्हारा बन्धु है, तुम्हारा सखा है। यह तुम्हारा साथी तुम्हें इतना प्रिय भी है कि तुमने स्वयं कुछ न भोगते हुए भी इस जीव के भोग के लिए ऐश्वर्यों से भरा यह सब संसार खोलकर रख दिया है, परन्तु फिर भी यह जीव-यह तुम्हारा ऐसा प्यारा सखा जीव-इस संसार में तुम्हारे प्रति अपराध करता रहता है, तुम्हारे नियमों का भङ्ग कर तुम्हें अप्रसन्न करता रहता है।

हे यजनीय देव! हम जीवों को इस प्रकार तुम्हारे प्रति अपराधी होने पर क्या करना चाहिए? हमें यह चाहिए कि हम पापी होने पर तुम्हारे दिये गये भोगों को त्याग दिया करें। हे यक्षिन्! पाप करते ही हमारे द्वारा तुम्हारे यज्ञ का भङ्ग हो जाता है और मनुष्य को बिना यज्ञ किये भोग भोगने का अधिकार नहीं है, अतः पापी होकर हमें भोग-त्याग कर देना चाहिए, किसी भोग के त्याग के रूप में उस पाप का प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए। पापी होने पर भोग कभी न करें-ऐसा करने से हमें तुम एक 'वरूथ' अर्थात् सुरक्षित घर वा आश्रय दे देते हो। हे जगदीश्वर! तुम सर्वज्ञ हो, मेरे हृदय को जानते हो, मुझ अपने उपासक के सब सच्चे भावों को जानते हो, अतः अब जब कभी मुझसे तुम्हारे किसी नियम का भङ्ग होगा तो मैं किसी भोग के त्यागने के द्वारा तेरी शरण में आने के लिए अपने हाथ फैलाऊँगा। हे विप्र! हे स्वामिन्! तब मुझे अपना 'वरूथ' अवश्य प्रदान कीजिएगा, हाथ फैलाये हुए मुझे अपनी गोद में स्थान देकर सुरक्षित कीजिएगा, कुछ समय के लिए अपने घर में मुझे आश्रय दीजिएगा, जिससे पवित्र होकर आगे के लिए मैं वैसा नियम भङ्ग करने से अलग रहूँ।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

गाय का दुश्मन कौन?

12 सितम्बर को नजीबाबाद उत्तर प्रदेश वन प्रभाग की बढ़ापुर रेंज की सीमा से सटे गांव जहानाबाद खोबड़ा में गाय की वफादारी निभाने की अनूठी घटना सामने आई है। खेत में चारा चरते समय अचानक एक बाघ ने पशुपालक पर हमला किया। इस पर उसकी 40 गायों के झुंड ने मुकाबला करते हुए बाघ को वहां से भगा दिया, गायों ने अपने स्वामी की जान बचा ली पर गाय को माता कहने वाला इन्सान आज गाय की जान क्यों नही बचा रहा है। गाय की वफादारी तो देख ली। अब देखिये इन्सान की वफादारी क्या कहती है। पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने तथाकथित गौरक्षा के नाम पर दुकान चलाने वालों को आड़े हाथों लिया था जिसके बाद पूरे देश में प्रधानमंत्री की आलोचना सुनी गयी थी। तब न जाने कितनी कविता कितने आलोचनात्मक लेख प्रधानमंत्री के इस बयान पर सोशल मीडिया में पढने को मिले थे। आए दिन देश के किसी न किसी क्षेत्र से गाय से भरे ट्रक, गौरक्षकों अथवा पुलिस द्वारा पकड़े जाने की खबरें आती रहती हैं। इन खबरों के सामने आने के बाद वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है। कई बार ऐसे वातावरण के मध्य हिंसा अथवा सांप्रदायिक हिंसा भी भडक चुकी है। परंतु ऐसे अवसरों पर यह तो देखा जाता है कि अपने ट्रक में बेरहमी से भरकर इन गायों को कौन ले जा रहा था तथा क्यों ले जा रहा था? परंतु इस बात की चर्चा करना कोई जरूरी नहीं समझता कि हत्यारों के हाथों में इन गायों को पहुंचाने का जिम्मेदार कौन है? यदि सही मायने में देखा जाए तो गौवध की शुरुआत वहीं से होती है जहां कि कम दूध देने अथवा दूध देना बंद कर देने वाली गायों को किसी खरीददार के हवाले कर दिया जाता है।

अभी हाल ही में इंडिया टुडे की एक टीम ने एक खबर जारी की जिसे पढ़कर सर शर्म से झुक गया। हमारा उद्देश्य किसी गौशाला के प्रति या गौरक्षक के लिए हीन भावना जगाना नहीं है। बस एक वह सच जो इसकी आड़ में छिपा बैठा है। उसे उजागर करना है। या ये कहो जो लोग खुद को हिन्दू कहकर अपनी आत्मा को बेचकर इन गौमाता को कटाने के लिए बेच रहे है, बस उनके चेहरे से नकाब हटाना है। बीते कुछ साल में देश में जिस तरह गाय हाईलाइट हुई है, वैसे और कुछ नहीं हुआ। गाय की पूजा करने वाले गौभक्तों की देश में कमी नहीं। लेकिन स्वयंभू गौरक्षक दस्तों की कारगुजारियां भी हाल के दिनों में खूब देखने को मिली। देश के 29 में से 24 राज्यों में गोवध पर प्रतिबंध है। उत्तर प्रदेश भी ऐसा ही राज्य है जहां गोवध पर सख्त सजा का प्रावधान है। जाहिर है कि कानून का पालन करने के लिए गायों पर यहां पुलिस की भी नजर रहनी चाहिए। पवित्र गायों के लिए सबसे सुरक्षित और अच्छी जगह कोई मानी जानी चाहिए तो वह देश की गाय-पट्टी (काऊ बेल्ट) क्षेत्र है। इस क्षेत्र का बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश में है। लेकिन इसी क्षेत्र में गाय की स्थिति का जो सच सामने आया, वो हैरान कर देने वाला है। सबसे सुरक्षित माने जाने वाले क्षेत्र में ही गाय को कैसे-कैसे खतरों का सामना करना पड़ रहा है। कैसे यहां गौशाला संचालकों, दलालों और भ्रष्ट पुलिसवालों का नापाक गठजोड़ कर रहा है। गायों और बछड़ों की खरीद-बेच का गोरखधंधा? उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के सैफनी कस्बे में पशुओं के बाजार। यहां बकरीद पर कुरबानी के लिए गाय और बछड़ों को लेकर खुले तौर पर मोलभाव किया जा रहा था। रिपोर्टर ने खुद को खरीददार बताते हुए कीमत जाननी चाही तो पता चला कि 16,000 से लेकर 22,000 हजार रुपए में गाय खरीदी जा सकती है। यहां देखकर सबसे ज्यादा हैरानी हुई कि सब कुछ बेखौफ चल रहा था।रिपोर्टर ने एक पशु विक्रेता से कहा, बकरीद के लिए एक गाय चाहिए? इस पर जवाब मिला- यहाँ बाजार में घूमकर देखिए, बहुत मिल जाएंगी! एक और पशु विक्रेता ने क्रीम रंग की गाय के लिए 17,000 रुपए की मांग की। टीम को रामपुर में सिर्फ जीवित पशु ही नहीं बिकते दिखे। यहां बीफ मार्केट में मीट का भी धड़ल्ले से कारोबार होते दिखा। मीट विक्रेताओं ने यह भी माना कि वो गोमांस बेच रहे हैं। रिपोर्टर ने जब एक मीट दुकानदार से पूछा कि "क्या तुम्हारे पास गाय (मीट) है?" इस पर दुकानदार का जवाब था- 'हाँ'। जो मीट दुकानदार बेच रहा था, उसकी कीमत उसने 160 रुपए प्रति किलो बताई।

एक और दुकानदार ने दावा किया कि पुलिस ने यहां सब (दुकानदारों) को आगाह कर रखा है कि जो भी मीट दुकान पर लटकाओ, उसकी स्किन पूरी तरह साफ होनी चाहिए जिससे कभी अचानक इंस्पेक्शन हो तो कुछ पकड़ा न जाए। रामपुर में एक गौशाला के संचालक का बर्ताव सबसे ज्यादा झटका देने वाला था। कान्हा गौशाला को चलाने वाले सुंदर पांडेय से रिपोर्टर ने पूछा- बकरीद पर कुरबानी के लिए वह गाय का इंतजाम कैसे करा सकता है? इस पर पांडेय का जवाब था, 'दो दिन में वह इसे त्यौहार के लिए उपलब्ध करा देगा। अभी जो यहां (कान्हा गौशाला) में जो मौजूदा स्टाक है वो कुरबानी के लिए फिट नहीं है, कुछ के सींग टूटे हैं, कुछ की टांगे क्षतिग्रस्त हैं। आपको कुरबानी के लिए बेदाग पशु चाहिए?' पांडे की बातों से यह भी साफ हुआ कि यहां से मीट के लिए बछड़े को भी खरीदा जा सकता है।

अलीम नाम के एक दलाल ने बताया कि ये पूरा गोरखधंधा कैसे चलता है। अलीम ने कहा, 'पुलिस (गायों को) पकड़ती है और पुलिस स्टेशन लाती है। यहां से उन्हें गौशाला वाले खरीद कर ले जाते हैं। पशुओं की संख्या और सेहत के हिसाब से दो, तीन, चार लाख रुपए का भुगतान किया जाता है। इसके बाद गौशाला वाले इन गायों का अपना पैसा वसूलते हैं। वह उन्हें बेच देते हैं (कालाबाजार में)। हालाँकि यह एक खबर नहीं है। इससे पहले भी उत्तर प्रदेश में गजरौला से प्रकाशित अमर उजाला अमरोहा के पेज पर दस नवम्बर 2015 को एक खबर प्रकाशित हुई थी जिसमे बताया गया था कि गौ समिति के ही गौ रक्षकों ने गायों को संभल के कसाईयों को बेच दिया! इसके बाद उसी दौरान दूसरी खबर मुरादाबाद के ही काँठ से आई थी कि कान्हा समिति ने भोजपुर में ही 9 लाख में गौ का सौदा कर डाला। अब बताइये इससे बड़ी बेशर्मी कहाँ मिलेगी कि धर्म और मर्यादा ताक पर रखकर माता को ही बेच दिया जाए! समाज में वैमनस्य फैलाने वाले यह तथाकथित सफेदपोश किस तरह धर्म की आड़ में न सिर्फ पैसा बना रहे हैं बल्कि समाज के एक बड़े हिस्से में गुंडागर्दी और अराजकता के बल पर साम्प्रदायिकता को मजबूत कर रहे हैं। इसलिए इन तथाकथित गौ सेवकों के चेहरों से नकाब उठाना कितना जरूरी है। यह यह खबरें बताने के लिए काफी हैं और समाज और प्रशासन को इन कथित गौ व्यापारियों की गतिविधियों से कितना होशियार रहने की जरूरत है। यह यहाँ बताने की कोई जरूरत नहीं है!

- सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर पर विशेष)

देश अभी गुलाम है ?

हमारा देश 1947 में स्वतंत्र हुआ था। किन्तु सही मायनों में हम आज भी पराधीन है। भाषा का पराधीन। मुगलों और अंग्रेजो की भाषा का पराधीन। हमारे तहसील और थाने अभी भी इन भाषाओं से स्वतंत्र नहीं है। एक तहरीर से लेकर भूमि के बेनामे तक में उर्दू भाषा अभी भी यहाँ विराजमान है, तो वहीं हिन्दी संवैधानिक मान्यता प्राप्त मात्र भाषा व्यवहार में है। देश में एक नहीं दो राजभाषाएँ हैं। अंग्रेजी वास्तव में दूसरी सहभाषा हो कर भी सत्ता के सभी केंद्रों पर राज कर रही है। दूसरी ओर हिन्दी प्रथम संवैधानिक राजभाषा के पद पर होते हुए भी मात्र कागज पर है। मतलब आज हिन्दी अँग्रेजी के अनुवाद की भाषा बनकर रह गयी है। दुनिया में ऐसी शोचनीय स्थिति किसी भाषा की नहीं होगी। देश की भाषा अपने पद से अधिकार से वंचित है। विदेशी भाषा का प्रभुत्व देश की सत्ता पर, राजकाज पर, शिक्षा, न्याय, मीडिया, व्यापार, उद्योग, उच्च वर्ग जो मुश्किल से चार प्रतिशत है, उसके आम व्यवहार में है। जिस कारण हिन्दी प्रसांगिक बनकर रह गयी। हिन्दी वस्तुत: फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है, हिन्दी का या हिंद से सम्बन्धित। हिन्दी शब्द की उत्पत्ति सिन्धु -सिंध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में 'स' को 'ह' बोला जाता है। इस प्रकार हिन्दी शब्द वास्तव में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालांतर में हिंद शब्द सम्पूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा। इसी हिंदी से हिन्दी शब्द बना। आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते है,वह आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है। आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है जो साहित्य की आत्मिक भाषा थी।

2 फरवरी 1865 के दिन लॉर्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में दिए गए अपने भाषण में जो कहा था, मैंने पूरे भारत कोने-कोने में भ्रमण कर ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं देखा जो या तो भिखारी हो या चोर हो। इस देश में मैंने ऐसी समृद्धता, शिष्टता और लोगों में इतनी अधिक क्षमता देखी है कि मैं यह सोच भी नहीं सकता कि हम इस देश पर तब तक राज कर पायेंगे, जब तक कि हम इस देश की रीड़ की हड्डी को ही न तोड़ दें, जो कि इस देश के अध्यात्म और संस्कृति निहित है। अत: मेरा यह प्रस्ताव है कि हम उनकी पुरानी तथा प्राचीन शिक्षा प्रणाली को बदल दें। यदि ये भारतीय सोचने लगे कि विदेशी और अँग्रेजी ही श्रेष्ठ है और हमारी संस्कृति से उच्चतर है तो वे अपना आत्म सम्मान, अपनी पहचान तथा अपनी संस्कृति को ही खो देंगे और तब वे वह बन जायेंगे जो हम उन्हें वास्तविकता में बनाना चाहते हैं। सही अर्थ में एक गुलाम देश। मैकाले का कथन वह बताता है कि स्वाधीनता के सत्तर वर्ष हो जाने पर भी अपनी भाषाओं और शिक्षा जैसे बुनियादी क्षेत्र में हमारी मानसिकता अब भी अँग्रेजी और अँग्रेजियत से मुक्त नहीं है। राष्ट्र स्वाधीन है, परंतु राष्ट्र की अपनी राष्ट्र भाषा तक नहीं है। शिक्षा, न्याय, प्रशासन और जीवन के हर क्षेत्र में अँग्रेजी भाषा का प्रभुत्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। अब हमें यह सत्य स्वीकार करना है कि हमने अँग्रेजी को ही माध्यम माना लेकिन समझा नहीं कि माध्यम ही संदेश होता है। अँग्रेजी से चिपके रहे और अब अँग्रेजी भाषी देशों के अंध भक्त हैं। फ्राँस और जर्मनी पश्चिमी होते हुए भी अँग्रेजी से विज्ञान नहीं सीखते। पूर्व का जापान, जापानी में ही विज्ञान की पढ़ाई करता है। रूस भी विज्ञान की पढ़ाई अपनी भाषा रशियन के माध्यम से करता है। परंतु हमारी धारणा है कि विज्ञान और तकनीक को अँग्रेजी में ही सीखा और विकसित किया जा सकता है, भारत की किसी भी भाषा में नहीं सीखा जा सकता है। हमें समझने ही नहीं दिया गया कि भाषा सिर्फ माध्यम नहीं है, वह हमारी जीवन पद्धति भी है और उसे अभिव्यक्त करने का साधन भी है। वह हमारी संस्कृति और सभ्यता का सार है। उसे त्याग कर हम कोई भी मौलिक काम कभी भी नहीं कर सकते हैं। अन्य भाषाऐं सीख कर उनमें कुशल कारीगर तो हो सकते हैं किंतु उनसे मौलिक सृजन नहीं कर सकते हैं। मौलिकता और सृजनता का सीधा संबंध हमारी जीवन पद्धति को अपने वास्तविक रूप में पूरी तरह से खुल कर अभिव्यक्त करने से है। यह अभिव्यक्ति सिर्फ अपनी भाषा में ही कर सकते हैं। बीसवीं सदी में रूस और जापान विज्ञान में ब्रिटेन और अमेरिका से आगे नहीं थे। आज उपभोक्ता वस्तुओं और तकनीक में जापान इन सबसे आगे है। सामरिक विज्ञान और अंतरिक्ष की खोज में रूस किसी से कम नहीं है। दोनों देशों में विज्ञान और तकनीक में अपनी जीवन पद्धतियों को नहीं बदला। इन देशों ने सार्वभौम विज्ञान को अपनी भाषाओं में सीखा और तकनीक को अपने देश की भाषाओं की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित किया। लेकिन हमने अपनी मान्यता बना रखी है कि विज्ञान और आधुनिकता अँग्रेजी भाषा से सीखी और लायी जा सकती है। अंग्रेज भाषा में साहित्य रचने वाले भारतीयों के लेखन में मौलिकता का अभाव होता है। इस कारण वे अँग्रेजी साहित्य में सही जगह नहीं पा रहे हैं। यही हालत अँग्रेजी से डॉक्टर, इंजीनियर या तकनीक सीखने वालों की है। अँग्रेजी हमें किसी क्षेत्र में आगे नही बढ़ने देगी। हम उसके अंध भक्त बनकर ही रह सकते हैं। असली सवाल हिंदी या भारतीय भाषाओं का है ही नहीं, अपितु भारत का अपने साक्षात्कार के माध्यम से भारत होने का है। 'इंडिया' से मुक्त होना होगा। जब तक हम अँग्रेजी से अपनी समस्याओं के ताले खोलने की कोशिश करेंगे, तब तक हम विषमता, भेदभाव, गरीबी, बेरोजगारी और हर व्यक्ति को सच्ची स्वाधीनता दे नहीं सकेंगे और नही सच्चे लोकतंत्र की स्थापना कर सकेंगे। भारत के भविष्य का निर्माण हिंदी सहित भारतीय भाषाओं को अपना कर ही किया जा सकता है। हमें पता लगाना होगा कि भारत की भाषाओं में कहाँ-कहाँ पर कितने युवाओं ने इंजीनियर, वैज्ञानिक, तकनीक के लिए संघर्ष किया है। अँग्रेजी भाषा से मुक्ति के लिए अपनी भाषाओं को अंगीकार किया है। इनका यशोगान हिंदी वालों को अवश्य करना चाहिए। हमारा लक्ष्य अँग्रेजी भाषा की अनिवार्यता के खिलाफ भारतीय भाषाओं को सम्मान देने का होना चाहिए।

- राजीव चौधरी

..... लॉर्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में दिए गए अपने भाषण में जो कहा था, मैंने पूरे भारत कोने-कोने में भ्रमण कर ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं देखा जो या तो भिखारी हो या चोर हो। इस देश में मैंने ऐसी समृद्धता, शिष्टता और लोगों में इतनी अधिक क्षमता देखी है कि मैं यह सोच भी नहीं सकता कि हम इस देश पर तब तक राज कर पायेंगे.... स्वाधीनता के सत्तर वर्ष हो जाने पर भी अपनी भाषाओं और शिक्षा जैसे बुनियादी क्षेत्र में हमारी मानसिकता अब भी अँग्रेजी और अँग्रेजियत से मुक्त नहीं है। राष्ट्र स्वाधीन है, परंतु राष्ट्र की अपनी राष्ट्र भाषा तक नहीं है। शिक्षा, न्याय, प्रशासन और जीवन के हर क्षेत्र में अँग्रेजी भाषा का प्रभुत्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। अब हमें यह सत्य स्वीकार करना है कि हमने अँग्रेजी को ही माध्यम माना लेकिन समझा नहीं कि माध्यम ही संदेश होता है। अँग्रेजी से चिपके रहे और अब अँग्रेजी भाषी देशों के अंध भक्त हैं।....

आर्य समाज के कार्यकर्ताओ के लिये सम्मान का विषय
हिन्दी आन्दोलन के सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी का दर्जा

आपको स्मरण होगा कि आर्य समाज के आह्वान पर हिंदी सत्याग्रह आन्दोलन 1957 में आर्य समाज के हजारो कार्यकर्ताओं/अधिकारियों ने भाग लिया था और जेल गए थे या यातनाये सहीं थीं। अब आपको जानकर गर्व होगा कि हरियाणा सरकार द्वारा हिंदी आन्दोलन के सत्याग्रह (1957) में भाग लेने वाले, जेल जाने वाले, यातना सहने वाले हरियाणा के ऐसे नागरिकों को हरियाणा सरकार स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा देकर उन्हें सम्मानित करने की योजना बनायी है। उनके उत्तराधिकारियों, परिवार के सदस्यों, सम्बन्धियों, तथा शुभेछुओं से अनुरोध है कि वे इस आन्दोलन से सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यलय को उपलब्ध करने का कष्ट करें ताकि हरियाना सरकार की ऐसे महानुभावों को 'स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा' की योजना का लाभ उठाया जा सके।

आपके पास इस बारे में जो भी जानकारी/प्रमाण उपलब्ध हों, वे उपलब्ध करा देवें। सभा द्वारा सम्बन्धित जेल से प्रमाण लेने का प्रयास किया जायेगा। यह प्रयास आप स्वयं भी कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए **सभा मन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी (9810505500)** पर सम्पर्क करें। आप अपने आवेदन निम्नांकित पते पर सीधे भी भेज सकते हैं तथा ईमेल भी कर सकते हैं-

उप-निदेशक, क्षेत्र शाखा, सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग,
चंडीगढ़ (हरि.) फोन : 0172-5059113, Email: dgiprharyana@yahoo.com

हिन्दी आन्दोलन के सत्याग्रहियों की सहायता हेतु
डी.जी.पी. हरियाणा से मिले महामन्त्री श्री विनय आर्य

हिन्दी आन्दोलन के सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी का दर्जा दिए जाने की घोषणा के उपरान्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी हरियाणा जेल के महानिरीक्षक श्री यशपाल सिंघल से जेल मुख्यालय पंचकुला जाकर भेंट की। उन्होंने उनसे निवेदन किया कि हिन्दी आन्दोलन में भाग लेने वाले आर्यजनों के पास संक्षिप्त जानकारी ही उपलब्ध होगी। अत: आपसे निवेदन है कि आप न्यून से भी न्यून जानकारी के आधार पर ही आवेदन करने वाले आर्यजनों को अधिकाधिक जानकारी एवं जेल प्रमाणपत्र उपलब्ध कराने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश जारी करें, जिससे आर्यजनों को परेशानी न हो और अधिकाधिक आर्य महानुभाव इसका लाभ प्राप्त कर सकें।

हरियाणा जेल के सर्वाच्च अधिकारी डी.जी.पी. श्री यशपाल सिंघल के साथ सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा अन्तर्विद्यालयी भाषण एवं समूह गान प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता बुधवार 24 अगस्त 2016 को श्री राजेन्द्र मदान जी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। बच्चों में क्रमशः महर्षि दयानंद के सपनों का भारत, आर्य समाज की मान्यताएं एवं वर्तमान शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता पर सुन्दर भाषण प्रस्तुत किये गए। इस आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री गोविन्द जी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी व उनके द्वारा की गयी समाज सेवा की सराहना की गयी। इस अवसर पर विद्यालय व आर्य समाज के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष उपस्थित थे। उन्होंने श्रीमती वीना आर्य, श्रीमती तृप्ता शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य श्रीमती अनीता जी एवं विद्यालय के अन्य कर्मचारियों का स्वागत शाल देकर किया।

निर्णायक मंडल में श्रीमती अनीता जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा जी एवं श्री देवेन्द्र आर्य जी ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती शशि बरगा ने सबका धन्यवाद किया।

30 अगस्त 2016 मंगलवार को बिरला आर्य कन्या सी सै स्कूल बिड़ला लाइंस में समूह गान प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। बच्चों ने क्रमशः देशभक्ति महर्षि दयानानंद एवं आर्य समाज पर आधारित भजनों द्वारा सबका मन मोह लिया। निर्णायक मंडल में महान संगीताचार्य श्री विजय भूषण जी, श्रीमती उमाराशशि दुर्गा, श्रीमती नीलू एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया।

दोनों प्रतियोगिताओं के तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। सभी प्रतियोगियों को सुन्दर प्रमाणपत्र एवं महापुरुषों के जीवन पर आधारित कामिक्स प्रदान किये गये। विजेता छात्रों को मैडल प्रदान किये गए। सभी के जलपान की सुन्दर व्यवस्था विद्यालय की ओर से की गयी थी।

श्री विजय भूषण जी ने बच्चो को सम्बोधित करते हुए कहा संगीत समगीत से मिलकर बना है। इसका अर्थ है अच्छी प्रकार से गायन। गायन, वादन एवं नृत्य तीनो से मिलकर संगीत बनता है तभी मनुष्य आनंद से सराबोर हो उठता है।

श्रीमती वीना आर्य जी ने कार्यक्रम का संचालन बड़ी कुशलता से किया।

प्रतियोगिताओं के समापन के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी (प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद) बधाई के पात्र हैं जिनके कुशल नेतृत्व में प्रतियोगिताएँ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। सभी विद्यालयों की प्रबंधक समिति प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों का धन्यवाद जिनके सहयोग से येप्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई। – ***वीणा आर्या, सयांजिका***

24 अगस्त, 2016 को आयोजित भाषण प्रतियोगिता के तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय तृतीय एवं चतुर्थ स्थान करने वाले विद्यार्थी

वर्ग -1 विषय : महर्षि दयानंद के सपनो का भारत
प्रथम : कृष्णानंद, आर्य वीर माडल स्कूल, बादली
द्वितीय : ईशा, आर्य पब्लिक स्कूल, राजा बाजार
तृतीय : स्निधि यादव, रतनचंद आ.प.स्कूल सरो. नगर
चतुर्थ : पूनम, रतनचन्द्र आ.प.स्कूल सरोजनी नगर

वर्ग 2 विषय: आर्य समाज की मान्यताएं
प्रथम : यश, गोविन्दराम गुरु. सै.स्कूल, रामबाग
द्वितीय: शशांक, रतनचंद आ.प.स्कूल, सरोजनी नगर
तृतीय: यश कौशिक, एस.एम. आर्य प.स्कूल, पंजाबी बाग
चतुर्थ : शिवानी राठौर, रतनचंद आ.प.स्कूल, सरोजनी नगर

वर्ग -3 शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
प्रथम : शिखा तिवारी, आर्यसमाज सी.सै. स्कूल, चावडी बाजार
द्वितीय : वेदांत, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग
तृतीय : शाहीन, बि.आ.क. सी से. स्कूल, बिडला लाइन्स
चतुर्थ– अरुण, गोविन्दराम गुरुकुल सेकेंडरी स्कूल, रामबाग

30 अगस्त, 2016 को आयोजित समूह गान प्रतियोगिता के तीनों वर्गों में प्रथम प्रथम, द्वितीय तृतीय एवं चतुर्थ स्थान करने वाले विद्यार्थी

वर्ग -1 विषय : देशभक्ति
प्रथम : आर्य पब्लिक स्कूल, राजा बाजार
द्वितीय: एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग
तृतीय : आर्य वीर माडल स्कूल, बादली
चतुर्थ : दयानंद आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

वर्ग -2 विषय : महर्षि दयानंद सरस्वती
प्रथम : एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग
द्वितीय: आर्य वीर माडल स्कूल, बादली
तृतीय : दयानंद आदर्श विद्यालय, तिलक नगर
चतुर्थ : बिडला आर्य गर्ल्स से. स्कूल, कमलानगर

वर्ग- 3 विषय : आर्य समाज
प्रथम : एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग
द्वितीय : बिडला आर्य गर्ल्स सी से. स्कूल, कमलानगर
तृतीय : दयानंद आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

संस्कृति मन्त्रालय में आर्यसमाज का पक्ष रखा

गत दिनों 28 जुलाई को आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने संस्कृति संवाद श्रृंखला, संस्कृति मन्त्रालय में आर्यसमाज और वेद का पक्ष रखा। इस अवसर पर गृहमन्त्री राजनाथ सिंह, संस्कृति एवं पर्यटन मन्त्री डॉ. महेश शर्मा प्रो. गिरीश मिश्र एवं डॉ. सच्चिदानन्द जोशी भी उपस्थित थे।

आर्य भिक्षु पुरस्कार से सम्मानित

देश विदेश में आर्यसमाज के हनुमान एवं नारद के नाम से विख्यात आचार्य नन्द किशोर जी को दिनांक 24 अगस्त को आर्यसमाज काकड़वाड़ी में आर्य भिक्षु पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एवं कलश देकर सम्मानित किया गया।

आज बेटियां कहां सुरक्षित हैं?

– डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

आज अखबार में खबर पढ़ी कि एक बेटी ने मुख्यमंत्री महोदय को अपने रक्त से पत्र लिखा है उसकी मां को दहेज लोभी ससुराली जनों ने जलाकर मार दिया था। इससे स्पष्ट है कि छोटी सी बच्ची के सामने अनेक समस्याऐं आ रही होंगी। कोई साथ नहीं दे रहा होगा ऐसे में सगे-सम्बन्धी भी किनारा कर जाते हैं अत्यधिक परेशान होकर रक्त से पत्र लिखना पड़ा।

समाज में आज ऐसा सामान्य से अधिक हो रहा है दहेज की अतिरिक्त मांग, दहेज हेतु बहू को प्रताड़ित करना, मार पीट करना, तंग करना, भूखी रखना, गला घोंटकर व जलाकर मार देना और आत्महत्या हेतु प्रेरित करना ऐसा अधिकतर हो रहा है। बहुत कम परिवार होंगे जहां बहू को बेटी की भाँति ससुराल में भी प्यार मिलता हो अधिकतर बहुएँ सास-ससुर, ननद, देवर, पति आदि द्वारा प्रताड़ित की जाती, पीटी व सताई जाती हैं उनमें से कुछ की मृत्यु हो जाती हैं कुछ जीवन भर घुटन में समय काटती हैं कुछ न्यायालयों की शरण में चली जाती हैं वहाँ भी कुछ को जीवन भर चक्कर ही काटने पड़ते हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है इसके लिए कोई न कोई दोषी अवश्य हैं हमारे समाज के ढांचे में कोई दोष है! समाज में यह बुराई फल फूल रही है दहेज को बढ़ावा देने वाले भी काई न कोई समाजिक व्यक्ति ही हैं जहां दहेज को प्रतिष्ठा का चिन्ह बना दिया जाता है। धनाढ्य वर्ग जहां धन सम्पदा का अभाव नहीं दहेज में बढ़चढ़ कर चल अचल सम्पत्ति दी व ली जाती हैं कहीं दूल्हों की बोली लगती है बेटा के बड़ा होते ही लाखों करोड़ों की बोली लगा दी जाती हैं फिर बेटी वाले को घेरा जाता है ईमान दारी दिखायी जाती है उदारता दिखायी जाती है प्यार दिखाया जाता है परन्तु विवाह होते ही बेटी जैसे ही ससुराल में पैर रखती हैं ससुराली जनों के तेवर बदल जाते हैं उनका चेहरा प्यार भरा होने के स्थान पर विकराल हो जाता है भौहें तन जाती हैं मुँह से आग के शोले निकलने

लगते हैं फिर विवाहिता का दमन आरम्भ हो जाता है।

समाज में एक और समस्या है जैसे ही बहू पतिदेव के घर में आती हैं दहेज कितना कैसा क्या-क्या लाई हैं घर-घर इस हेतु बुलावा लगता हैं आस पडौस ग्राम नगर निवासी सम्बन्धी सभी आकर दहेज को देखते कोई सराहना करता तो कोई बुराई परन्तु ऊपर देखने वाले सदैव बुराई ही करते हैं यही कहते हैं क्या लाई। कुछ भी नहीं लाई पूरे सामान को कबाड़ा बता दिया जाता है लड़की के माता पिता परिवार पर दोषारोपइ होते हैं यहीं से हो जाता है उत्पीड़न का आरम्भ! दूल्हा पक्ष समझता है कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा कम हो गई इसमें ऐसे वह लोग हैं जो बहू को बेटी की भांति नहीं समझते उसे अपने परिवार का सदस्य नहीं मान पाते उनका द्रष्टिकोण बेटे बेटी के जीवन के भविष्य के प्रति शून्य होता है अपितु अपनी मान मर्यादा दहेज से नापने में अधिक होता है दहेज को घर की इज्जत से देखते हैं पड़ोसियों सम्बन्धियों से तुलना करते हैं अपना घर दूसरे की कमाई से भरना चाहते हैं। ईश्वर ने जितना दिया है उस पर सन्तोष नहीं, बहू भी किसी की बेटी हैं। उसे ससुराल में प्यार मिलेगा, परिवार का सदस्य मान लिया जाएगा, तो वह विरोध क्यों करेगी उसका तो अब वही घर है, वही उसका जीवन है, उसी घर को चलाना है। बस आवश्यकता है प्यार की, अपनेपन की, वह अपना सर्वस्व अर्पण कर देगी।

दहेज के भूखे दहेज के दानव दहेज के भेड़ियों के लिए कानून भी बने 498ए धारा का प्रयोग दहेज निषेध अधिनियम के अन्तर्गत किया जाता हैं आज बहुओं को दहेज के लिए मारने पीटने प्रताडित करने वालों के लिए इस कानून को ढीला किया जाना सर्वथा अनुचित होगा और प्रताडित करने वाले दोषियों को कठोर दण्ड का प्रावधान आवश्यक है। यदि दहेज दानवों को छोड़ा जाता रहा तो दहेज के लिए और अधिक भेडिये बढ़ जाएँगे।

– *चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाजों का निरीक्षण कार्य आरम्भ

ह्वदिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 21 अगस्त, 2016 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली स्थिति समस्त आर्यसमाजों का निरीक्षण कार्य आरम्भ कर दिया गया है। इस हेतु प्रत्येक निरीक्षक महानुभाव को 4 आर्यसमाजों की जिम्मेदारी दी गई तथा तथा प्रत्येक 10-12 आर्यसमाजों पर एक पर्यवेक्षक की नियुक्ति की गई है। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों को उनके यहां आने वाले निरीक्षक एवं उनके पर्यवेक्षक के नाम एवं सर्म्पक सूत्र की सूचना भेजी जा रही हैं। यदि किसी आर्यसमाज को पत्र प्राप्त न हो तो निरीक्षक सम्बन्धी जानकारी के लिए **महामन्त्री श्री विनय आर्य (9958174441)** अथवा **श्री अशोक कुमार जी (9540040322)** से सम्पर्क करें। सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे निरीक्षक महानुभाव को सभी जानकारियां सहर्ष उपलब्ध कराएं। आपसे यह भी निवेदन है कि निरीक्षण कार्य में सहयोग हेतु आप अपनी आर्यसमाज की ओर से एक अधिकारी की नियुक्ति करें और उनका नाम एवं नं. अपने निरीक्षण महानुभाव को नोट करा देवें जिससे वे सीधे उनसे सम्पर्क करके आर्यसमाज में पहुंचे और निर्दिष्ट सूचनाएं फार्म में अंकित कर लेवें। – **महामन्त्री**

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

जिज्ञासा ने बना दिया वैदिक धर्मी

पंकज आर्य

कस्बा चण्डौस, अलीगढ़ उ.प्र में लगभग 40 साल से आर्य समाज है, बस अब में और तब में फर्क इतना है कि 'पहले केवल औपचारिक था, और अब सक्रिय है, पुराने आर्य समाजियों की संख्या जहां केवल उंगलियों पर गिनने लायक थी, यानी तीन या चार थी, वही वर्तमान में संख्या सैकड़ों में हैं, और ज्यादातर कार्यकर्ता युवा ही हैं।'

2004 या 5 तक मैं भी आर्य समाज से ऐसे ही अनभिज्ञ था जैसे कि अधिकांश वर्तमान पौराणिक समाज। आर्य समाज का नाम तो सुना था, पर ऐसे ही जैसे, आज हम अन्य मतावलम्बियों ब्रह्मकुमारी, राधास्वामी, जयगुरुदेव, सांई मत, मौनी बाबा, साकार विश्व हरि भोले बाबा, स्वाध्याय परिवार, ओशो आदि। मन में एक कुंठा व जिज्ञासा रहती थी कि क्यों हमारे हिंदू धर्म में ही नित नये मत बढ़ते जा रहे हैं, और इन सब में वास्तविक व सत्य पथ कौंन सा है? कस्बे में प्रत्येक वर्ष आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव 'वेद कथा' का आयोजन धूम-धाम से मनाया जाता है अब भी मनता है, उसका विरोधाभास मेरे आस-पड़ोस के पौराणिक जनों में घोर चर्चा चलती रहती थी, खासकर वे लोग जो पेशे से ब्राह्मण थे, जान-बूझकर ऐसी चर्चाएं व अफवाह फैलाने में संलग्न रहा करते थे जैसे - आर्यसमाजी तो किसी को

नही मानते, ये तो हमारे भगवानों की बुराई करते हैं, ये तो निगुणे है, ये तो नास्तिक हैं, इन पौराणिक तथाकथित पंडितों के बहकावे में आकर ही अन्य लोग भी फिर इन्हीं के सुर में सुर मिलाते और जगह-जगह 'आर्यसमाज' की मनगढ़ंत बुराई,..का दौर वेद कथा उत्सव के दौरान चलता रहता। खुद मैं भी ब्राह्मण परिवार से होने के कारण पौराणिक ब्राह्मणों की पोप लीला सुनकर, मेरे अंदर भी बार-बार ये चर्चाऐं सुनकर जिज्ञासा होनी शुरु हुई, कि आखिर माजरा है क्या, चलो कार्यक्रम सुनकर ही देखते है, पहली बार कुछ अटपटा सा लगा, हां वैदिक भजन जरूर पहली बार से ही अच्छे लगे, वैदिक विद्वानों की तर्कपूर्ण बातों से हम भी धीरे- धीरे निरुत्तर होने लगे, अन्य विरोधियों से यही तर्क रखने शुरु किये तो, उनका विरोध भी झेलना शुरु हो गया। फिर धीरे धीरे रुचि बढ़ने पर कस्बे के आसपास ओगीपुर आदि गांवों में होने वाले वार्षिकोत्सवों में भी जाने का सिलसिला शुरु हो गया, पर आशंकित मन अभी भी सशंकित था, फिर अपने ही नजदीक के एक बुजुर्ग आर्य समाजी महानुभाव से वैदिक साहित्य के रूप में पहली पुस्तक 'तत्वज्ञान' पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ, कई जिज्ञासाऐं शांत हुईं, कई नई और पैदा भी हुई, धीरे-धीरे अन्य छोटे-छोटे आर्ष साहित्य अन्य महानुभाव सुशील आर्य जी से लेकर पढना शुरु किया, साप्ताहिक आर्यसंदेश, परोपकारिणी, आदि, पढ़ने से बहुत सी जिज्ञासा शांत हुई, परंतु असली जिज्ञासा शांति अपनी आर्यसमाज के पुरोहित आचार्य दिनेश शास्त्री के आग्रह पर 'महर्षि दयानंद सरस्वती जी की कालजयी रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़कर ही हुई, उसमें मानव मष्तिष्क में धर्म, आध्यात्म सम्बन्धित अनेकों शंकाओं का समाधान पढ़कर, फिर नई शंकाओं हेतु पुरोहित जी से प्रश्न कर के ही हुई।

लगभग दो साल तक शंका व समाधान का ये सिलसिला यूं ही चलता रहा पर आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि मैं एक ऐसी सत्य प्रचारक संस्था से जुड़ चुका हूं, जो दानव को मानव, व मानव को महामानव बनाने का महान कार्य करती है। मुझे अब उन सजातीय पौराणिकों की तनिक भी चिंता नहीं जो दिन-रात पानी पीकर आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द को कोसने में लगे रहते हैं।

वर्तमान में मैं कस्बे में ही कपड़े का व्यापार करता हूं, आर्य समाज में उप मंत्री का दायित्व मिला हुआ है, साथ ही पतंजलि योग समिति के सह जिला प्रभारी व मुख्य योग शिक्षक के रूप में योग व वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में संलग्न हूं।

-उपमन्त्री, आर्यसमाज चण्डौस अलीगढ़ (उ.प्र.)

Continue from last issue :-

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

I do not desire Moksha, free of struggle

O Lord, I do not want the world of moksha free for struggle, If I live in the peaceful abode of heaven, what duty will be there for me to perform? What scope and opportunity will I get where the kingdom of truth is always established? I wish that sphere of activities on the earth where I may gain deep peace amidst turmoil and pursue the truthful life amidst a life of thousand dealings in falsehood.

O Lord, you are ever busy to sustain the Universe, yet calm and quiet. May I as your true son work without desire and thereby derive peace and contentment. I pray, please send me always to the mortal world. Bless me with humanbody so that I will be always determined to serve.

O Dearest, may service be my goal. Even if I deserve Moksha due to holy deeds, let me be born again in the world full of action. May I never nurture the desire to enjoy alone the pleasure of liberation leaving company of the aggrieved and miserable creatures. May I experience the Joy of engagement in the field of service. Pray, keep me ever awake to protect the glory of the earth that ungrudgingly bears our weight.

आ ते वत्सो मना यमत्परमाच्चित् सधस्थात्।
अग्ने त्वां कामये गिरा।। (Sv.1166)

A te vatso mano yamat paramaccit sadhasthat.
agne tvam kamaye gira..

What will you ask God, when you succeed in meeting Him?

O worshipper, to get the holy vision of the Lord is the birth-right of all human beings. Start your mental journey hereand now to attain that glamorous moment. Take help of the seven mothers, who will lead you to the goal. They are seven beneficial steps in your divine mission: Yama, Niyama, Asana, Pranayama, Pratyahara, Dhyana and Dharana. Climb these steps diligently. Remember, success is achieved by efforts and perseverance.

O worshipper, at that auspicious moment wha will you ask from the Lord, your life- saviour? You may forget to ask anything while experiencing the thrilling self- realisation. Or you may ask some petty things. Remember, intellect is the miracle of your life. Pray for true intelligence, that wonderful power of understanding which is the miracle of human life. And pray with humility. intelligence is the purest form of wisdom, the greatest wealth. After the end of ignorance and variation of intellect, what remains is pure knowledge. Knowledge shows the relationship between God-soul, God-matter and soul-matter. It guides man towards perfection. Do not ask for the devilish pleasure of sleep like Kumbhakarna or for mere physical strength like that of Ravana.Like Bibhisana pray for treasure of truth.

जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये।
अयं ध्रुवो रयीणं चिकेतदा।। (Sv.101)

Jajnanah sapta matrbhir medham asasate sriye.
ayam dhruvo rayinam ciketada..

The Sun

"O celestial sun, full of might, you give to the world diverse forms and colours; you are the eagle of the sky; you wear the golden raiment of your birth-place as you wish; in every season you wear different clothings of varieties of aurora; you alone, O sun, beget the sacrifice that has been going on in this worid since eternity."

"Because of you, O sun, seeds of manifold stuff are laid in waters, and multifold lustre added to everything that is on the earth, ever fresh and changing; you have imparted greatness to the midspace. You, the great bestower of blessings, call aloud to draw our attention towards the glory of the mighty God, who is the Sun behind the suns."

अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रं हिरण्ययं बिभ्रदत्कं सुपर्णः।
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेधमृज्रो जजान।। (Sv.1843)

Abhi vaji visvarupo janitram hiranyayam bibhradatkam supamah.
suryasya bhanum rtutha vasanah pari svayam medham rjro jajana..

अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि यत् संबभूव।
अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः।। (Sv.1844)

Apsu retah sisriye visvarupam tejah prthivyam adhi yat sambabhuva.
antarikse svam mahimanam mimanah kanikranti vrsono asvasya retah..

To be Conti....

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में

16वां परिचय सम्मेलन	17वां परिचय सम्मेलन
रविवार 6 नवम्बर 2016	रविवार 15 जनवरी, 2017
आर्यसमाज धामावाला देहरादून	आर्यसमाज अशोक विहार-1 दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 16वें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज धामावाला देहरादून उत्तराखण्ड में 6 नवम्बर 2016 तथा 17वां परिचय सम्मेलन 15 जनवरी, 2017 आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रातः 10 बजे से आयोजित किए जाएंगे।

इससे पूर्व अभी तक सम्पन्न हुए 15 सम्मेलनों के आशातीत एवं सार्थक परिणाम सामने आए हैं। आर्य परिवार परिचय सम्मेलनों को लेकर आर्य जनों में काफी उत्साह है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिएं जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फॉर्म सभा की वेबसाईट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किए जा सकते हैं तथा **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा	एस. पी. सिंह	डॉ. विनय विद्यालंकार
राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक, दिल्ली	प्रान्तीय संयोजक, उत्तराखण्ड
मो. 9414187428	9540040324	मो. 09412042430

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

प्रेरक प्रसंग

मियाँ जी की दाढ़ी एक आर्य के हाथ में

1947 ई. से कुछ समय पहले की बात है। लेखरामनगर (कादियाँ), पंजाब में मिर्जाई लोग 6 मार्च को एक जलूस निकालकर बाजार में आर्यसमाज के विरुद्ध उत्तेजक भाषण देने लगे। वे 6 मार्च का दिन (पण्डित लेखराम का बलिदानपर्व) अपने संस्थापक नबी की भविष्यवाणी (पण्डितजी की हत्या) पूरी होने के रूप में मनाते रहे।

एक उन्मादी मौलाना भरे बाजार में भाषण देते हुए पण्डित लेखरामकृत ऋषि-जीवन का प्रमाण देते हुए बोले कि उसमें ऋषिजी के बारे में ऐसा-ऐसा लिखा है.....एक बड़ी अश्लील बात कह दी।

पुराने आर्य विरोधियों के भाषण सुनकर उसका उत्तर सार्वजनिक सभाओं में दिया करते थे। एक आर्ययुवक भीड़ के साथ-साथ जा रहा था। वह यही देख रहा था कि ये क्या कहते हैं। भाषण सुनकर वह उत्तेजित हुआ। दौड़ा-दौड़ा एक आर्य महाशय हरिरामजी की दुकान पर पहुँचा, ''चाचाजी! चाचाजी! मुझे एकदम ऋषि-जीवन-चरित्र दीजिए।'' हरिरामजी ताड़ गये कि आर्यवीर जोश में है-कुछ विशेष कारण है। हरिरामजी तो वृद्ध अवस्था में भी जवानों को मात देते रहे। ऋषि-जीवन निकाला। दोनों मिर्ज़ाई जलूस की ओर दौड़े। रास्ते में एक युवक ज्ञानप्रकाश ने हरिरामजी को भाषण का वह अंश सुनाया। मौलाना का भाषण अभी चालू था। वह स्टूल पर खड़ा होकर फिर वही बात दुहरा रहा था।

हरिरामजी ने आव देखा न ताव, मौलाना की दाढ़ी अपने हाथों में कसकर पकड़ ली। उसे जोर से लगे खींचने। मौलाना स्टूल से गिरे। दोनों आर्य अब दहाड़ रहे थे। ''बोल, क्या बकवास मार रहा है? दिखा पण्डित लेखरामकृत ऋषि-जीवन में यह कहाँ लिखा है? पहले ऋषि-जीवन में दिखा कहाँ लिखा है?''

सहस्त्रों की भीड़ में से किसी मिर्ज़ाई को यह साहस न हुआ कि लेखराम-श्रद्धानन्द के शेरों से मियाँजी की दाढ़ी बचा सके। तब कादियाँ में मुट्ठीभर हिन्दू रहते थे, आर्य तो थे ही 15-20 घर। इस घटना के कई प्रत्यक्षदर्शी अब भी जीवित है। क्या यह घटना साहसिक आर्यों का चमत्कार नहीं है? आर्यो! इस अतीत को पुनः वर्त्तमान कर दो। ला. जगदीशमित्रजी ने बताया कि मौलाना का भाषण लाला हरिरामजी की दुकान के सामने ही हो रहा था, वहीं लाला हरिरामजी की दुकान के सामने ही हो रहा था, वहीं लाला हरिराम ने शूरता का चमत्कार दिखा दिया।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी दिल्ली

भवन निर्माण कार्य हेतु सहयोग की अपील

आपको विदित ही होगा कि गत वर्ष आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलव कोलोनी को सरकार द्वारा गिरा दिया गया था। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने तत्काल दिल्ली सरकार, एम.सी.डी. एवं रेलवे के अधिकारियों से सम्पर्क किया तथा सभा ओर से तत्काल भवन के पुनर्निर्माण का कार्य आरम्भ किया और एक वर्ष के अन्दर ही दो मंजिला भवन तैयार का लिया गया, जिसका औपचारिक उद्घाटन 15 मई, 2016 को भव्य समारोह के साथ किया गया। आर्यसमाज के भवन निर्माण का कार्य धनाभाव के चलते अभी अधर में ही लटका हुआ है, जिससे आर्यसमाज की गतिविधियों को संचालित करने में कठिनाई अनुभव की जा रही है।

अत: आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी के भवन निर्माण को पूर्णता प्रदान करने के लिए समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थानों एवं आर्यजनों से हेतु सहयोग अपील की जाती है। आपसे निवेदन है कि आप अपने परिवार/आर्यसमाज/ संस्थान की ओर से अधिकाधिक राशि का सहयोग **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम दिया गया समस्त दान आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** आप अपनी सहयोग राशि सभा के बैंक खाते में सीधे जमा भी करा सकते हैं।

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' A/c No. 910010001816166

Axis Bank, Karol Bagh IFSC Code : UTIB0000223

निवेदक : अरुण प्रकाश वर्मा, संयोजक विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल :20-22 अक्टूबर,16

आवश्यक सूचना

1. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने वाले/भाग लेने के इच्छुक वे सभी आर्य महानुभाव जो अपने साधनों से नेपाल पहुंचेंगे तथा अपनी आवास व्यवस्था भी स्वयं ही करेंगे से निवेदन है कि वे अपना पंजीकरण अवश्य करा लवें तथा पंजीकरण राशि सार्वदेशिक सभा में अवश्य जमा करवा देंवें। आपसे यह भी निवेदन है कि आप किस माध्यम से, कब और कितने बजे नेपाल पहुंच रहें हैं उसकी सूचना सार्वदेशिक सभा कार्यालय को पत्र द्वारा अथवा ईमेल द्वारा अवश्य भेजें। आपकी सूचना के अभाव में नेपाल में सुव्यवस्था सम्भव नहीं हो सकेगी।

2. सार्वदेशिक सभा के माध्यम से नेपाल महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों के लिए एक और यात्रा विकल्प तैयार किया गया है- **यात्रा नं. 2(C)**

इस यात्रा विकल्प में भाग लेने वाले महानुभाव यात्रा 1 (ए) 22000/- रुपये के समान **सम्मेलन के दिनों में अतिथि भवनों में ठहरेंगे तथा पोखरा भ्रमण के समय 3 सितारा होटलों** में रहेंगे। इस यात्रा में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों को **31500/- रुपये** का बैंक ड्राफ्ट ***'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'*** के नाम बनवाकर यथाशीघ्र ***'श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'*** के पते पर निर्धारित आवेदन पत्र एवं अपने एक फोटो पहचान पत्र - पासपोर्ट/वोटर कार्ड/आधार कार्ड की फोटो प्रति के साथ भेजें। आवेदन पत्र www.thearyasamaj.org से डाउनलोड किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए **श्री एस. पी. सिंह (9540040324)** से सम्पर्क करें।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री (9826655117)

रमण सिंह का आर्य समाज द्वारा स्वागत

कोटा। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डा. रमण सिंह का मंगलवार को प्रात: आर्यसमाज के प्रतिनिधिमण्डल ने हवाई अड्डे पर केसरिया साफा पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया।

आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा की अगुवाई में जिला मंत्री कैलाश बाहेती, तलवंडी आर्यसमाज के प्रधान आर.सी. आर्य, भीमगंजमण्डी के प्रधान प्रेमनाथ कौशल, रेलवे कॉलोनी के मंत्री कर्णसिंह, तलवंडी के पूर्व मंत्री लालचंद आर्य, डीएवी पब्लिक स्कूल की आचार्या सरिता रंजन गौतम, धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य, राजीव आर्य, वेदभूषण आर्य ने मुख्यमंत्री रमण सिंह को केसरिया साफा पहनाकर स्वागत किया एवं गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ 21 किलो फूलों की माला पहनाई। इस मौके पर अर्जुनदेव चढ्ढा ने कोटा में आर्यसमाज द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों की जानकारी दी। सांसद ओम बिरला ने मुख्यमंत्री को बताया कि अर्जुनदेव चढ्ढा की अगुवाई में आर्यसमाज सामाजिक जागरूकता व समाज सेवा के अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

डीएवी कोटा की ओर से प्रिंसीपल सरिता रंजन गौतम, अर्जुनदेव चढ्ढा, शोभाराम आर्य ने फूलों का गुलदस्ता भेंटकर स्वागत किया। डॉ. रमणसिंह ने कहा कि हमने छत्तीसगढ़ में 72 स्कूल डीएवी प्रबंधन को दे दिये हैं।

आर्यसमाज रोहतास नगर का

51वां श्रावणी पर्व महोत्सव

22-25 सितम्बर, 2016
यज्ञ : प्रात: 6:45 से 8:15 बजे
ब्रह्मा : पं. सन्दीप कुमार शास्त्री
भजन : पं. सहदेव सरस जी
प्रवचन : आचार्य राजू वैज्ञानिक
भजन-प्रवचन : सायं 6:30 से 8:30 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन : 25 सितम्बर
प्रात: 7:30 बजे से दोपहर 1 बजे

- श्रीमती सुषमा यति, प्रधान

आर्यसमाज सागरपुर में

संगीतमय वेद कथा

समापन समारोह : 18 सितम्बर, 2016
यज्ञ : प्रात: 7 से 8 बजे
ब्रह्मा एवं भजन: पं. देशराज 'सत्येच्छु'
वेद कथा : स्वामी यज्ञमुनि 'वानप्रस्थी'
सायंकालीन भजन-प्रवचन : 3:30- 6:30
स्थान : नगरवन पार्क, सागरपुर
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- मानधाता सिंह आर्य, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज आर्यपुरा दिल्ली-110007

प्रधान :श्रीमती सुषमा आर्या
मंत्री :श्री विवेक आर्य
कोषाध्यक्ष :श्री अतुल वर्मा

आकर्षक नेम स्लिप्स

शिक्षार्थियों के मन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने हेतु कापी व पुस्तकों पर चिपकाने के लिए। सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

ग्रेटर नोएडा पुस्तक मेला

स्थान : इण्डिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमि., नॉलेज पार्क-2, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

12 सितम्बर से 18 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

निवेदक :-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

आर्य वधु चाहिएं

30 वर्षीय, 5'10'' एम.ए., पी.एच.डी., वार्षिक आय 10 लाख रुपये, योगा टीचर मुम्बई में कार्यरत।

27 वर्षीय, 5'8'', डबल एम.ए,एम.एड., वार्षिक आय 10 लाख रुपये, योगा टीचर मुम्बई में कार्यरत।

25 वर्षीय, 5'9'', वार्षिक आय 5 लाख रु., एन.डी.आर.एफ. कटक (ओडिशा) में कार्यरत।

तीनों आर्य युवकों के लिए आर्य विचारधारा वाली आर्य परिवार की कन्याएं चाहिएं। जाति बन्धन कोई नहीं। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें:-

- श्री राम मूरत आर्य,
रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर
मो. 9415535059, 7666666991

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 सितम्बर से रविवार 18 सितम्बर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 सितम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 सितम्बर, 2016

कठुआ (जम्मू) वेद प्रचार का भव्य समापन : 16 जुलाई से 15 अगस्त 2016 तक हुई अमृत वर्षा

आर्यसमाज कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में इस वर्ष का वेद प्रचार मास का आयोजन 16 जुलाई से 15 अगस्त तक भव्यता के साथ मनाया गया। दोपहर 2 से 5 बजे तक सत्संग होता था। पहले सत्संगी मातायें भजन

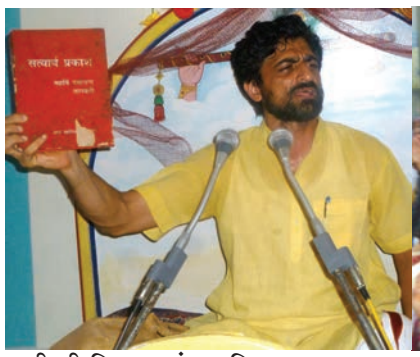

गाती थी फिर आगंतुक विद्वान महानुभाव भजन प्रवचन करते थे। इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री राजवीर सिंह आर्य (मुजफ्फरनगर), उपदेशक श्री विजय शास्त्री जी (अमृतसर) और आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी (होशंगाबाद) ने रोज एक वेद मन्त्र की व्याख्या सुनाई और सत्यार्थ प्रकाश पर चर्चा करते हुए प्रकाश डाला। राष्ट्र भक्ति व आतंकवाद की तुलना के साथ ईश्वर के विभिन्न गुण, कर्म, स्वभाव की व्याख्या की। समाज के अन्तर्गत संचालित डी ए वी के छात्रों को भी प्रवचन दिए व छात्र-छात्राओ में आर्यसमाज व वैदिक विचारधारा के संस्कार देने का निवेदन किया। समापन समारोह व पूर्णाहुति में 21 यज्ञ वेदियों पर 50 दम्पति परिवार यजमान के रूप में उपस्थित थे। आचार्य जी ने इनसे संस्था से जुड़े रहने का आग्रह किया। अनेक घरो में भोजनोपरांत अलग से उपदेश किये। आतंक के साये में रह रहे अत्रस्थ सभी लोगों को प्रेम करुणा व आध्यात्म की इस डोर से बंधना भा गया। कार्यक्रम के संयोजक श्री भारत भूषण आनन्द (मुनिजी) ने सभी का ध न्यवाद दिया और दिसम्बर में आर्यसमाज मंदिर से बाहर निकलकर बड़े ग्राउंड में एक सप्ताह की वेद कथा के आयोजन की घोषणा की।

- गायत्री प्रसाद आर्य, महामन्त्री

प्रतिष्ठा में,

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

स्वास्थ्य चर्चा

बुखार चिकिनगुनिया, मलेरिया व डेंगूं का योग से करें उपचार

आइये जानते हैं कि योग व यज्ञ से हम कैसे जानलेवा बुखार चिकिनगुनिया,मलेरिया व डेंगूं को दूर भगा सकते हैं, साथ ही हमारा समाज कैसे स्वस्थ व सुंदर बनता है-

योग सर्व रोगनाशक है, अब तक ये सुनते आ रहे थे, अब यह पूरी तरह प्रमाणित भी हो चुका है कि साध्य-असाध्य रोगों के समूल नाश के साथ ही अनुवांशिक रोगों को भी योग से मिटाया जा सकता है, कुछ प्राणायाम व आसनों के माध्यम से बुखार नाशक उपाय ...

⋆ भस्त्रिका प्राणायाम् : इस प्राणायाम से हमारे शरीर का तापमान सामान्य रहता है, बुखार से होने वाले सर दर्द व जोड़ों के दर्द,व कफ रोगों को दूर करता है,

⋆ कपालभाति प्राणायाम् : इसके द्वारा हम बुखार के रोगी का पेट खराब होने से बचा सकते हैं, पाचन क्रिया एकदम दुरुस्त रखता है ये। जब पेट सही होता है तो रस व रक्त के निर्माण की प्रक्रिया सही रहती है, रक्त कण(प्लेटलेस) का अभाव नहीं हो पाता.. शौच भी खुलकर आता है।

⋆अनुलोम-विलोम प्राणायाम् : ये हमारे रक्त को शुद्ध करने व संपूर्ण देह में शुद्ध प्राणवायु का संचार करता है, शरीर की अशुद्धियों को भी बेहतर तरीके से दूर करता है, साथ ही हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है,

⋆चंद्रभेदी प्राणायाम् : ये तीव्र बुखार में शरीर के तापमान को नियंत्रित कर बुखार को सामान्य करता है।

कुछ उपयोगी 'आसन'

⋆ पवनमुक्तासन् : पेट को साफ रख, बुखार से बचाता है,

⋆ गौमुखासन् : यकृत (लीवर) व गुर्दे (किडनी)को बल देकर बुखार की घबराहट से बचाता है।

⋆ सूर्य नमस्कार : मासपेशियों को लचीला बनाता है, बुखार के समय मासपेशियों के भयंकर दर्द से मुक्ति दिलाता है। शरीर फुर्तीला रहता है,

संक्षेप में कह सकते हैं कि योग से हमारे रोग तो दूर होते ही हैं, साथ ही रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में कारगर है।

- पंकज आर्य, मु.योग शिक्षक, पतंजलि योगपीठ, अलीगढ़,
मो. 8923233665, Email: aryapankaj2323@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह